माटी-कोछड़, काइस (कुल्लू) में कड़ू की खेती पर आयोजित प्रशिक्षण-सह-हैंडहोल्डिंग कार्यशाला की रिपोर्ट

Report on training cum handholding workshop on Kadu cultivation at Mati Kochad, Kais, Kullu

भा.वा.अ.शि.प.–हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा 2 जुलाई, 2026 को जिला कुल्लू के माटी-कोछड़, काइस में जायका (JICA) परियोजना के अंतर्गत गठित सामान्य हित समूह (Common Interest Group) के सदस्यों, जायका स्टाफ तथा काइस वन्यजीव अभयारण्य के कर्मचारियों के लिए कड़ू की खेती पर हैंडहोल्डिंग एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान ने बताया कि प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य हैंडहोल्डिंग के माध्यम से प्रतिभागियों को खेत में कड़ू की वैज्ञानिक खेती की व्यावहारिक जानकारी प्रदान करना था, बेहतर तरीके से बढ़िया उत्पादन प्राप्त कर सकें। डॉ. संदीप शर्मा वैज्ञानिक एवं समूह समनवयक ने कड़ू के मैक्रो-प्रोपेगेशन की विधि का फील्ड में व्यावहारिक जानकारी दी तथा खेती के दौरान आने वाली विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए तकनीकी सुझाव दिए। उन्होंने पौध तैयार करने की वैज्ञानिक विधियों तथा पौधों की उचित देखभाल के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। कड़ू उत्पादक एवं विशेषज्ञ श्री जहान सिंह ने प्रतिभागियों के साथ कड़ू की खेती के अपने अनुभव साझा किए तथा बेहतर उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए। उन्होंने बताया कि खेत में उचित जल निकासी की व्यवस्था तथा पर्याप्त मात्रा में जैविक खाद का उपयोग उच्च गुणवत्ता एवं अधिक उत्पादन के लिए अत्यंत आवश्यक है । उन्होंने यह भी कहा कि शीत ऋतु में कड़ू के खेतों को स्थानीय जंगलों से प्राप्त सूखी पत्तियों से ढककर रखना चाहिए, जिससे पाले एवं अत्यधिक ठंड से जड़ों की सुरक्षा हो सके। डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान ने प्रतिभागियों को कड़ू के सतत् कटान (Sustainable Harvesting) की वैज्ञानिक तकनीकों से अवगत कराया। इसके अतिरिक्त विशेषज्ञों ने कड़ू की हार्वेस्टिंग, प्रसंस्करण, भंडारण तथा विपणन से संबंधित महत्वपूर्ण पहलुओं पर भी विस्तार से चर्चा की। प्रशिक्षण के दौरान सफल कड़ू उत्पादकों के उदाहरण प्रस्तुत कर प्रतिभागियों को व्यावसायिक स्तर पर कड़ू की खेती अपनाने के लिए प्रेरित किया गया । कार्यक्रम के अंत में सामान्य हित समूह के सदस्यों द्वारा कड़ू की खेती से संबंधित पूछे गए सभी प्रश्नों का विशेषज्ञों द्वारा संतोषजनक समाधान किया गया।

ICFRE–Himalayan Forest Research Institute (HFRI), Shimla, organized a handholding and training/workshop programme on Kadu cultivation on 2nd July 2026 at Mati-Kochhar, Kais, for the members of the Common Interest Group (CIG) constituted under the JICA Project, along with JICA staff and the staff of the Kais Wildlife Sanctuary. During the programme, Dr. Joginder Singh Chauhan stated that the primary objective of the training was to provide participants with practical, field-based knowledge through handholding so that they could adopt scientific cultivation practices and achieve higher productivity. Dr. Sandeep Sharma, Scientist and Group Coordinator Resaerch, provided practical field training on the macro-propagation technique of Kadu. He also explained the scientific methods of raising planting material and shared technical recommendations to address the various challenges encountered during Kadu cultivation. In addition, he elaborated on the proper care and management of Kadu plants. Mr. Jahan Singh, an experienced Kadu grower and expert, shared his practical experiences with the participants and offered valuable suggestions for improving Kadu production. He emphasized that proper drainage in the field and the adequate application of

organic manure are essential for obtaining higher yields and better-quality produce. He further advised that during winter, Kadu fields should be mulched with dry leaves collected from nearby forests to protect the roots from frost and severe cold. Dr. Joginder Singh Chauhan also acquainted the participants with the scientific techniques of Sustainable Harvesting of Kadu. In addition, the experts discussed important aspects of Kadu harvesting, processing, storage, and marketing. During the training, successful case studies of Kadu growers were presented to motivate the participants to adopt Kadu cultivation on a commercial scale. At the end of the programme, all queries raised by the members of the Common Interest Group regarding Kadu cultivation were satisfactorily addressed by the experts.